



## पुरुष सत्तात्मक समाज में गांधारी की नारी अस्मिता : 'कोमल गांधार' Purush Sattatamk Samajma Gandhari ki Nari Aasmita : Komal Gandhara

KEYWORDS

Tomato ice cream, standardization, sensory evaluation

Jograna Vishnubhai Merabhai

Plot No.1669-A, Ground Floor, Gopal Complex, Opp.Sabstation, Near panna Park, Sardar nagar  
Bhavnagar-364001

'अस्मिता' अथा तू पहचान ! जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु की अपनी एक अलग पहचान होती है . उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग पहचान तथा अस्मिता होती है . जो उसके व्यक्तिगत रूप को प्रकट करती है . इसी पहचान के कारण व्यक्ति अपने-आपके-विचार-प्रकट करता है . यदि व्यक्ति की कोई विशेष पहचान न हो तो वह मात्र कल्पना का विषय अथवा किड़ो-मकोड़ों की श्रेणी में आ जायेगा . उसके व्यक्तिगत तथा रूप, गुण आदि अनुमान तथा कल्पना के विषय हो जायेंगे . इसलिये संसार का प्रत्येक मानव चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अपने व्यक्तिगत के प्रति सजाग होता है .

भारतीय वाङ्मय में साहित्यिक स ज्ञान की दृष्टि से महाभारत सवा चिक्र उव र अपजीव्य रहा है . रचनाकारों ने इसके विभिन्न कथा-सूत्रों, आभ्यानों, पात्रों आदि को आवश्यकतानुसार अपना विषय बनाकर इनमें नये सिरे से अथा न्वेषण किया है . शंकर शेष क त 'कोमल गांधार' की आदिम मनोवृत्ति रही है . 'कोमल गांधार' विराट राजनीतिक परिघटनाओं के यथापि सती नारी की असहाय यीम की पहचान है . प्रभामंडित व्यक्तियों के अनजाने यथाय को समझने और रेभांडित करने की चेष्टा है . और कुछ साव भोम समाधान प्रस्तुत करने की लेभकिय ललक भी है .

'कोमल गांधार' में पुरुष सत्तात्मक समाज में निरीह नारी की उत्पीड़ित नियति और उसके अस्मिता के सनातन प्रश्नों को गांधारी के माध्यम से उठाया गया है . गांधारी सदियों से पुरुष वग द्वारा छली और शोषित नारी का प्रतीक है . नारी पर स्वत्व और बलात् अधिकार भावना पुरुष की आदिम मनोवृत्ति रही है . 'कोमल गांधार' में पुरुष की इसी मनोवृत्ति की शिकार बनी है - गांधारी . गांधारी जो सुबल राज की कन्या है, व तराष्ट्र की पत्नी तथा दुधो धन - दुःशासन सहित सौ पुत्रों की माँ है .

नाटककार शंकर शेष ने 'कोमल गांधार' के पौराणिक पात्रों और उनसे जुड़ो जीवित स्थितियों को मानवीय दृष्टि से पकड़ो है . गांधारी के माध्यम से वत मान संवेदना के स्पन्दनों को उभारा है . प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार ने वत मान समय में विक्रत छोटी राजक नीति, पुरुष-सत्तात्मक समाज में नारी की उत्पीड़ित नियति, मानवीय सम्बन्धों में व्याप्त अंतवि रोध, तनाव, टकराहट, अहं तथा व्यक्ति के जीवन मूल्यों के विघटन में अनाधिकार राजनीतिक हस्तक्षेप को व्यापक ढंग पर उभारा है .

शंकर शेष ने 'कोमल गांधार' के माध्यम से गांधारी के जीवन की शोकांतिका को प्रस्तुत कर यह बताते का प्रयत्न किया है कि कत व्य की आड़ में पाप करना ही हमारी नियति हो गई है . गांधारी एक स्त्री है, क्या इसीलिये उस पर अन्याय करने का उसके पिता, भिष्म और यहाँ तक की उसका भावी पति व तराष्ट्र को अधिकार है ? क्या विवाह जैसे व्यक्तिगत निष्पत्ति य में उसकी सहमति का कोई अर्थ नहीं है ? क्या नकार दिया गया उसके अस्तित्व को पूरी तरह ? क्या सब लोगों ने एक योजना बनाकर उस पर अन्याय नहीं किया ? क्या कुटुंब-कुल में स्त्री का स्वाभिमान कोई अर्थ नहीं रखता ? उसकी कोई अस्मिता नहीं है क्या ? राजनीति हीतनी कूर होती है क्या ? राजकत से जन्मे शरीर से लयादा कुछ नहीं माना गया उसे . गेसा क्यों ? क्या राजनीति व्यक्ति को हीतना पतित बना सकता है ? एक आकाश भी, कि स्त्री एक भावी जमीन नहीं है जिसे आसानी से रौंद कर शांति से जिया जा सके ? ईत्यादि अनन्य प्रश्न उठे शेष ने 'कोमल गांधार' नाटक के माध्यम से उठाये हैं .

आलोच्य नाटक में भी भीष्म एक कठोर राजनीतिज्ञ बनकर हर भावनात्मक सवाल को राह जनीतिक ढल हँदते हैं . भीष्म इस नाटक में उन राजनीतिकों का प्रतिक्रम बनकर आये हैं, जो हर 'अनीति' को 'राजनीति' कहकर अपना उल्लूक सीधा कर लेते हैं . नाटक में भिष्म को पडयन्त्रकारी, छल-कपट करने वाला, कन्या-हरण कता के रूप में प्रस्तुत किया गया है .

भीष्म राजनीतिक सौंड-गौंड तथा अपनी शक्ति के प्रभाव से गांधारी का विवाह व तराष्ट्र से करा देते हैं . भीष्म की व क्षित राजनीतिक सोय गांधारी की अस्मिता को निगल जाती है . भीष्म व तराष्ट्र को अविवाहित नहीं रहने देना चाहते थे, क्योंकि उन्हें कुटुंब के समाप्त हो जाने का डर था . एक दासी के साथ व तराष्ट्र के सम्बन्ध गहरे जा रहे थे . गेसे में यदि दासी से शूद्र पुत्र हो गया तो वह आगे चलकर सत्ता पर दावा भी कर सकता है . इसलिये वह चाहते थे कि व तराष्ट्र का विवाह जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिये . वे रातय का हित सभसे उपर मानते

थे इसलिये उनके मत से गांधारी तथा व तराष्ट्र के विवाह में न तो महत्व गांधारी का था और न व तराष्ट्र का . भीष्म संजय से कहते हैं - "तुम साधारण - सी भात को कुछ लयादा ही महत्व दे रहे हो, इस विवाह में न तो महत्व है इस लड़ की का और न ही व क्षराष्ट्र का 77% कौरवों को उत्तराधिकारी नहीं चाहिये क्या ? उसके लिये जरूरी है दो शरीर 77% और एक कम का 88% 77% . " व तात्पर्य यह है कि गांधारी का महत्व मात्र हीतना ही है कि उससे हस्तिनापुर के लिये उत्तराधिकारी पैदा किया जा सके बस .

पुरुष वग की इस व क्षित राजनीति के कारण गांधारी को मिलता है - अंधत्व का अभिशाप ! वह अन्याय भदा शत नहीं कर पाती . अपने उपर किये गये अन्याय के प्रति आकाश व्यक्त करती है . व षा और प्रतिहिंसा के विचारों से आंदोलित होकर वह अपनी आँवों पर आढ जीवन पडी भाँधने की घोषणा करती है . जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन अंधकार मय तथा संवेदन शून्य हो जाता है . आभिर गांधारी को इस विदु म्भित जीवन जीने को विवश करने का ञिम्मेदार कौन है ? भीष्म ही न, और भीष्म जैसे अन्य पुरुष . भीष्म द्वारा आत्मनिष्पत्ति य के अधिकार से प्रवृत्त गांधारी पहली और अंतिम स्त्री नहीं है, अपितु स्त्री पर अन्याय और शोषण की पूरी परम्परा है . सत्यवती, अम्भा, अम्भिका, अम्भालिका तथा इनके बाद गांधारी और माद्री . नारी के प्रवृत्त छोटे रहने का अंत नहीं .

व तराष्ट्र को गांधारी के शरीर की आवश्यकता थी . उस शरीर से उत्पन्न एक और शरीर, दो आँवों वाला रातय-सत्ता का भावी अधिकारी . वह गांधारी से कहता है - "तो मुझे चाहिये तुम्हारा शरीर . छो, शरीर 77% मुझे चाहिये तुम्हारे शरीर से उत्पन्न एक और शरीर - दो आँवों वाला राज-सत्ता का भावी अधिकारी 77% . " उक्त उद्धरण से यह स्पष्ट नहीं होता कि व तराष्ट्र के लिये गांधारी साधन के रूप में हीतमाल की जाने वाली वस्तु के अलावा और कुछ नहीं है ? क्या व तराष्ट्र भी गांधारी के शरीर मात्र को राज-सत्ता के भावी अधिकारी के लिये हीतमाल नहीं करता ?

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की गति इससे लयादा कुछ और नहीं कि वह पुरुष का अधुरापन कूर करती है . उसके शरीर की भूष और कामाशक्ति को सन्तुष्ट करती है . गांधारी व तराष्ट्र के लिये बन्धा पैदा करने वाली मशीन है . अहंभिसित पुरुष (व तराष्ट्र) ने कभी यह जानने का प्रयत्न ही नहीं किया कि "स्त्री को समझने के लिये कभी शरीर के पार भी जाना होता है . " उ व तराष्ट्र को भी गांधारी का शरीर ही अपेक्षित है, व्यक्तिगत नहीं . क्योंकि इस शरीर का, मशीन की भाँति प्रयोग कर उन्हें वंश विकास का स्वप्न साकार करना है, इससे बढ़ कर रातय के लिये उत्तराधिकारी जुटाना है . व तराष्ट्र के रूप में पुरुष वग अपने हीतनी सीमित उद्देश्यों के अंधेपन में नारी की अस्मिता को नहीं समझ पाता . निश्चय ही राजनीति तथा राजसत्ता की व क्षित मानसिकता को व तराष्ट्र प्रकट करता है . इस तरह व तराष्ट्र भी गांधारी पर आजीवन अन्याय करता रहा .

'पिता रक्षति कौमाये ' की मान्यता के अनुसार पिता अपनी पुत्री की कौमाय की रक्षा करने के साथ ही उसके लिये योग्य जीवनसाथी भी चुनता है . परन्तु गांधारी के पिता गांधार नरेश जाबाल गांधारी का विवाह राजनीतिक हितों के चलते एक अंधे व्यक्ति व तराष्ट्र के साथ तय कर देते हैं . उस समय पूरे आय वत में हस्तिनापुर एक शक्तिशाली साम्राज्य था जबकी गांधार एक छोटा रातय . हस्तिनापुर की मित्रता तथा अति-शक्तिशाली रातय का सम्बन्धी बनने के लालच में गांधार नरेश गांधारी का विवाह व तराष्ट्र जैसे अंधे व्यक्ति के साथ स्वीकार कर लेते हैं . इस पूरे पडयन्त्र की लनक भी गांधारी को नहीं हो पाती . तात्पर्य यह है कि एक पिता अपने राजनीतिक हितों की पृष्टि के लिये अपनी पुत्री को साधन के रूप में हीतमाल करता है . पिता के कारण ही उसे आजीवन अंधत्व का अभिशाप तथा एक अन्धे व्यक्ति के साथ जीवन जीने के लिये विवश होना पड ता है . राजनीतिक हित व्यक्ति को कितना पतित बना सकता है वह गांधारी के पिता के आवरण से स्पष्ट हो जाता है . 7

इस प्रकार 'कोमल गांधार' नाटक पुरुष सत्तात्मक समाज में नारी की उत्पीड़ित नियति, माह नवीय सम्बन्धों में विष धोवली सत्ता की व क्षित राजनीति तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में अहं की टकराहट आदि संवेदनाओं को स्पष्ट करता है . समाज व्यवस्था के केन्द्र में बैठे पुरुष को ही सम्पूर्ण निष्पत्ति का अधिकार है, और उसके समस्त दुष्परिणामों भोगने के लिये नारी विवश है . यही विदु म्भना इस क ति में गांधारी के माध्यम से नाटककार ने व्यंजित की है .

## REFERENCE

1. 'कोमल गांधार' - शंकर शेष, प 7 1x-1उ3 % 'कोमल गांधार' - शंकर शेष, प 7 0x3 उ3 'कोमल गांधार' - शंकर शेष, प 7 09 7 नारी अस्मिता की परम् - 31% दश न पाइउय, प 7 09 विष्णु जोगराष्ठा (पीणय%डी% शोध छात्र) सौराष्ट्र विरवविद्यालय, राजकोट%